प्रश्न लोक-कथाओं से आप क्या समझते हैं? इनके वर्गीकरण को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर → लोक साहित्य के अध्ययन में लोक-कथाओं का स्थान अत्यन्त महत्वपूर्ण है। व्यापकता और प्रचुरता की दृष्टि से इनका मूल्य अत्यधिक है। भारतीय लोक साहित्य में लोक-कथाओं की संख्या अनन्त है। केवल हिन्दी की ही विभिन्न बोलियों में प्रचलित कथाओं का संग्रह किया जाए तो कई वृहत् संकलन ग्रन्थ तैयार हो सकते हैं। जिस प्रकार आदि काव्य का जन्म इस देश में हुआ था उसी प्रकार सबसे प्राचीन कथाओं की उत्पत्ति भी इसी पुण्य भूमि में हुई थी। भारतीय कथा साहित्य प्राचीन है। भारतीय कथाओं की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इनका प्रभाव संसार के प्रायः सभी देशों के कथा-साहित्य पर प्रचुर रूप से पड़ा है। लोक कथाएँ विभिन्न रूपों में लोक जीवन को आच्छादित करती हैं। आदिकाल से ही यह लोक कथा मनुष्य की चेतना में घर कर गयी है। मानव के सुख दुःख, प्रीति-शृंगार, वीर-भाव और वैर इन सब ने स्वाद बनकर लोक-कथाओं को पुष्ट किया है। रहन-सहन, रीति-रिवाज, धार्मिक विश्वास, पूजा-उपासना आदि से कहानी का ठाट बनता और बढ़ता रहता है। कहानी मनुष्य के लिए अपूर्व विश्रांति का साधन है, मन के आयास को हटाने के लिए कहानी मानव समाज का प्राचीन साधन है।

डॉ० सत्या गुप्त ने लोक कथा के संबंध में कहा है कि- लोक कथाओं में लोक मानस की सब प्रकार की भावनाएँ तथा जीवन दर्शन समाहित हैं। कुछ जानने की जिज्ञासा, घटनाओं का

Scanned by CamScanner

के स्वरूप सभी कुछ लोक कथा में मिल जाते हैं। लोक कथा के संदर्भ में डॉ० सत्येन्द्र के विचार भी उल्लेखनीय हैं — "लोक में प्रचलित और परम्परा से चली आने वाली मूलत: मौखिक रूप से प्रचलित कहानियाँ लोक कहानियाँ कहलाती हैं।

लोक कथा अथवा लोक कहानी के उद्गम पर सभी विद्वानों के विचार लगभग एक सा है। इसके संबंध में भारतीय विद्वानों में डा० हजारी प्रसाद द्विवेदी जी कहते हैं — यद्यपि इस शब्द "लोक कथा" के प्रयोग के विषय में विद्वानों में मतभेद रहा है। लोक कथा शब्द मोटे तौर पर लोक प्रचलित उन कथानकों के लिए व्यवहारित होती है जो मौखिक ~~[illegible]~~ परम्परा से क्रमश: एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को प्राप्त होते रहते हैं।

इस संबंध में डॉ० कुन्दन लाल उप्रेती ने अभिव्यक्ति के दो रूप माने हैं।

1. पौराणिक कथाओं के रूप में तथा
2. लोक कथाओं के रूप में।

जो कथावस्तु तथा उसकी कलात्मक कथन प्रणाली एक साहित्यिक सौंदर्य प्राप्त कर लेती है लोक-कथा विश्व व्यापक है। इसमें लोकगीत नाना रूपों में प्रकट होता चला आ रहा है। मानव के दु:ख-सुख, रीति-रिवाज, आस्थाएँ एवं विश्वास इन लोक कथाओं में अभिव्यक्त होते रहते हैं। लोक कथा मौखिक रूप से ही प्राप्त है।

लोक कथाओं का वर्गीकरण

बंगला लोक साहित्य के विद्वान डॉ० दिनेश चन्द्र सेन

ने लोक कथाओं का इस प्रकार किया है।

1. स्वर्ग कथा
2. हास्य कथा
3. धर्म कथा
4. गीत कथा

डॉ० सत्येन्द्र का वर्गीकरण — डॉ० सत्येन्द्र ने ब्रज की लोक कथाओं को निम्नलिखित आठ श्रेणियों में विभाजित किया है।
1) गाथाएँ, 2) पशु-पक्षी सम्बन्धी कथाएँ, 3) परी की कथाएँ, 4) विक्रम की कहानियाँ, 5) बुद्धिमत्ता सम्बन्धी कहानियाँ, 6) निरीक्षण गर्भित कहानियाँ, 7) साधु-पीरों की कहानियाँ, 8) कारण निदर्शक कहानियाँ।

डॉ० कृष्णदेव उपाध्याय ने भी वर्ण्य-विषय के आधार पर लोक कथाओं का वर्गीकरण इस प्रकार से किया है —
1) उपदेश कथा, (2) व्रत कथा, (3) प्रेम कथा, (4) मनोरंजक कथा, (5) दंत कथा एवं (6) पौराणिक कथा

1. **उपदेश कथा** → लोक साहित्य में ऐसी कथाएँ उपलब्ध हैं जिनमें उद्देश्य प्रधान होती है। उपदेश की इस प्रवृत्ति को इन कथाओं की आत्मा समझनी चाहिए। पंचतंत्र तथा हितोपदेश की समस्त कथाएँ इसी कोटि के अन्तर्गत आती हैं। इन कहानियों में कथनात्मक उपदेश भरा पड़ा है। पंचतंत्र तथा हितोपदेश में जानवरों तथा पक्षियों के मुख से कहानियाँ कहलवाई गई हैं। इन सब में नीति या उपदेश सन्निहित है। इस तरह शैक्षिक सभ्य कथाएँ भी हैं जो लोक प्रचलित हैं।

2. **व्रत कथा** → धार्मिक कृत्यों एवं विधि-विधानों से सम्बन्धित

P.T.O.

जीवन ओत-प्रोत है। अतः हमारे धार्मिक क्रिया-कलापों में व्रतों का महत्वपूर्ण स्थान होना स्वाभाविक है। इन व्रतों के सम्बन्ध में अनेक कहानियाँ प्रचलित हैं। सत्यनारायण व्रत, गणेश जी की कथा, हरतालिका तीज कथा, करवा चौथ इत्यादि, जिन्हें तीज-त्योहार पर व्रतों को पालन करते हुए कथाओं को सुनते व सुनाते हैं।

3. <u>प्रेम कथा</u> → इन कहानियों में प्रेम की कथाएँ बड़ी सुन्दर रीति से कही गई हैं। माता का पुत्र के प्रति प्रेम जितना वात्सल्यपूर्ण होता है पत्नी का पति प्रेम दृढ़ और स्वाभाविक होता है, बहिन का भाई के प्रति प्रेम कितना अकृत्रिम होता है इसकी झाँकी इन कथाओं में देखने को मिलती है। स्त्रियों के प्रति प्रेम का जो उत्कृष्ट एवं अलौकिक आदर्श पाया जाता है लोक कथाओं में जो दाम्पत्य प्रेम उपलब्ध होता वह नितान्त पवित्र और शुद्ध है,

4. <u>मनोरंजन कथा</u> → कुछ कथाओं का उद्देश्य केवल मनोरंजन मात्र है, ऐसी कथाओं को बालगण बड़े ध्यान से सुनते हैं। ढेला-पत्ती की कहानी ऐसी ही है जो बच्चों के मनोरंजन को लक्ष्य में रखकर लिखी जान पड़ती है। इस कथा का अंत इस प्रकार से किया है कि मिट्टी का ढेला गल गया, पत्ती हवा में उड़ गई और इस प्रकार कथा समाप्त हो गई।

"ठेला गइले निरहिलाई
पनई अइले उड़िमाई
मनद कथा गइले ओराई।"

5. सामाजिक कथा → सामाजिक कथाएँ वे हैं जिनमें समाज का वर्णन पाया जाता है। बहुत सी ऐसी कहानियाँ उपलब्ध होती हैं जिनमें राजा के न्याय की कथा, दुर्भिक्ष के कारण जनता को कष्ट, बहु-विवाह तथा बाल-विवाह का उल्लेख पाया जाता है। इन कथाओं को सामाजिक कहानियों की श्रेणी में रखा जा सकता है,

6. पौराणिक कथा → लोक साहित्य में पौराणिक कथाओं का भी अभाव नहीं है किन्तु, इसीलिए सत्य हरिश्चन्द्र तथा नल-दमयन्ती की कथा लोग बड़े चाव से सुनते हैं। गोपीचन्द, राजा भरथरी तथा श्रवण कुमार की कथा भी कुछ कम प्रसिद्ध नहीं है। सारंगा-सदावृक्ष की कहानी लोगों में बड़ी लोकप्रिय है। जहाँ पहली (शिव आदि) कहानियाँ पौराणिक हैं वहाँ दूसरी कथाएँ गोपीचन्द भरथरी पौराणिक न होते हुए भी पौराणिकता के पुट पा चुका है।

इस प्रकार से लोक कथाओं को प्रधानतया इन्हीं उपर्युक्त छः श्रेणियों में विभाजन किया जा सकता है। अन्य प्रकार की कहानियों का भी इन्हीं श्रेणियों में अन्तर्भाव हो सकता है।

Scanned by CamScanner